राष्ट्रवादी स्वतंत्रता सेनानी एवं पूर्व विधायक : भाईजी रामरतन कोचर

डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा
समन्वयक - पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र,
वैदिक हेरिटेज एवं पाण्डुलिपि शोध संस्थान, जयपुर

जीवन तो प्रत्येक व्यक्ति को मिलता है, किन्तु जिस जीवन से देश और समाज का उद्धार होता हो, धर्म और संस्कृति का उत्थान होता हो और मानवता की सेवा होती हो, ऐसा जीवन जीने का साहस किसी-किसी में होता है। राष्ट्रप्रेम, मानवसेवा, प्रभुसेवा, सर्वधर्म समभाव अपने जीवन का मूल मन्त्र समझने वाले संजीदा इन्सान का व्यक्तित्व खद्दर की धोती, खद्दर का कुर्ता, ऊपर जाकिट,पैर में चप्पल, चेहरे पर सौम्य मुस्कराहट के रूप में उजागर होकर प्रस्तुत होने वाले व्यक्तित्व का नाम है रामरतन कोचर। दूसरों को सशक्त बनाने की चाह रखने वाले रामरतन कोचर को अपने लिए शक्ति बटोरने की इच्छा ने उद्वेलित नहीं किया।

बड़ी और बुलन्द शख्सियतों की पहचान ही यह है कि वह जब जीवित हो, तो ऐसा लगे कि हम में से ही एक आम आदमी हैं; लेकिन न हों, तो यह गर्व भरा एहसास हम में जागे कि जितना समय हम उस शख्स के साथ जिए, वह हमारे जीवन का मूल्यवान 'काल-खंड' था। रामरतन कोचर निश्चय ही कहीं असाधारण थे; लेकिन वे जमीन की गहराई से, नींव से सर उठाते और पौरुष की आभा से आलोकित अपनी तरह के अलग ही शख्स थे। राजस्थान संस्कृत अकादमी की अध्यक्ष, रामरतन कोचर की पौत्री, करणसिंह कोचर की पुत्री डॉ. सरोज कोचर ने बताया कि मंगसर सुदी ५, विक्रम-संवत् १९६४ तदनुसार 20 दिसम्बर,1906 को बीकानेर में रिद्धकरण कोचर की धर्मपत्नी श्रीमती लाडबाई की कुक्षि से रामरतन कोचर का जन्म हुआ। अपने दादा भोजराज के लाडले रामरतन अपने माता-पिता के चार लड़कियों के मध्य इकलौते पुत्र थे। राजस्थान के बीकानेर ओसवाल समाज में शिक्षा का प्रचार-प्रसार अधिक नहीं था। पढ़ने-लिखने के सामान्य अभ्यास के साथ वाणिज्योपयोगी गणित (वाणिका) एवं सुलेख का विशेष अभ्यास कराया जाता था।

इन्होंने बीकानेर में ही साधारण रूप से स्कूली शिक्षा ग्रहण की। इन्हें 12 वर्ष की आयु में ही कोलकाता अपनी बहिन-जीजाजी के पास भेज दिया। जीजाजी प्रमुख वस्त्र व्यवसायी थे। रामरतन का देश सेवा के प्रति रुझान होने के कारण न तो इनका मन व्यवसाय में लगा, न ही घर में। स्कूली शिक्षा बीच में ही समाप्त हो गई। कोलकाता में अमर शहीद यतीन्द्रनाथ दास के अनुगामी बन कर क्रान्तिकारियों की गुप्त कार्यवाहियों में भाग लिया। सन् 1928 में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस द्वारा आयोजित कोलकाता कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर गठित कांग्रेस सेवादल के रूप में

नेताजी द्वारा ही दीक्षित हुए। 1930 में गांधीजी के सत्याग्रह आन्दोलन के सजग प्रहरी बने और चर्चित होने के कारण इनको जेल जाना पड़ा। इनकी क्रान्तिकारी गतिविधियों से बीकानेर में घरवाले परिचित हुए। तब घरवालों ने सुनियोजित रूप से इनको बीकानेर बुलाने हेतु एक तार कोलकाता भेजा, जिसमें लिखा था ~ दादाजी की तबीयत बहुत खराब है। शीघ्र घर आओ। रामरतन हिम्मत और हौसला रखते हुए दादाजी के स्वास्थ्य लाभ की भगवान से प्रार्थना करते हुए बीकानेर पहुँचे। यहाँ आने पर परिवार के लोगों ने किसी भी स्थिति में वापस कोलकाता नहीं जाने दिया। युवा रामरतन का मन राजनीति में न रमे इस भाव से प्रेरित होकर उनके घरवालों ने बीकानेर के लूणकरण बच्छावत की पुत्री सूरज कुमारी से उन्हें विवाह-बंधन में बांध दिया। कोचर दम्पत्ति के चार पुत्र रामसिंह, करणसिंह, वल्लभकुमार, विजयकुमार तथा तीन पुत्रियां जतनदेवी, शुभ एवं शान्ता हुई। कोलकाता से लौटने के बाद इन्होंने बीकानेर के प्रसिद्ध लाभूजी कटले में किराये की दुकान में वस्त्र व्यवसाय प्रारम्भ किया। रतन की हट्टी के नाम से लोग इनकी दुकान को जानते थे।

राजस्थान के निर्माण के साथ मुख्यमंत्रियों के जल्दी-जल्दी बदलने का सिलसिला मोहनलाल सुखाडिया पर रुका। इस दौरान सरकारों में बीकानेर का प्रतिनिधित्व सशक्त नहीं हो पाया, विकास की दृष्टि से बीकानेर संभाग और विशेषतः बीकानेर नगर की घोर उपेक्षा ही होती रही। अनेक प्रयासों के बावजूद जब कोई भी अनुकूल निर्णय नहीं हुआ तब अपनी ही कांग्रेसी सरकार के विरुद्ध तत्कालीन बीकानेर जिला कांग्रेस अध्यक्ष रामरतन कोचर ने 5 जुलाई,1955 को प्रस्ताव पारित कर जन-आन्दोलन की घोषणा कर दी। कांग्रेस महासमिति और प्रदेश कांग्रेस को सूचित कर दिया कि राष्ट्रीय पर्व को छोड़ कर किसी भी मंत्री और कांग्रेस नेता के कार्यक्रम का बहिष्कार करेंगे और अनशन पर बैठेंगे,जेल भरेंगे। परिणामत: प्रदेश के संगठन और सरकार को बीकानेर के लिए विकासयोजना स्वीकृत करने को मजबूर होना पड़ा। बीकानेर के विकास की आधार रचना के सूत्रधार रामरतन कोचर और उनके सहयोगी मूलचंद पारीक रहे।

राजस्थान में जयपुर के बाद दूसरा मेडिकल कॉलेज बीकानेर में ही खुला था जिसका श्रेय रामरतन कोचर को भी है। मेडिकल कॉलेज के अलावा राजस्थान नहर, जलोत्थान योजना, ऊनी मिल, पशुविज्ञान महाविद्यालय, पॉलीटेक्निक महाविद्यालय, औद्योगिक क्षेत्र, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान व डूँगर महाविद्यालय का नया भवन आदि उन्हीं के प्रयासों का फल है। 15 जुलाई,1956 के उपचुनाव में जाटबहुल लूणकरणसर क्षेत्र से विधायक चुने गए। उनके सामने समाजवादी नेता माणकचन्द सुराणा प्रत्याशी थे। रामरतन कोचर ने स्वयं को केन्द्र नहीं मानकर कार्य और कार्यकर्ताओं को महत्व देते हुए चुनाव जीतने के समय ही आगे चुनाव नहीं लड़ने की घोषणा कर दी। रामरतन कोचर ने जयपुर में गौड़ भवन सी-स्कीम को कांग्रेस कार्यालय ही नहीं वरन् राजनीतिक, सामाजिक एवं विकास की रचनात्मक गतिविधियों का केन्द्र बनाया।

गौड़ भवन को संभाग और राज्य के कांग्रेस कार्यकर्ताओं का आश्रय स्थल बनाया, जहाँ आवास एवं भोजन की व्यवस्था थी। उस भवन का किराया, बिजली-पानी, भोजनादि के लिए धन की व्यवस्था कोचर स्वयं और समर्थ सज्जनों के सहयोग से करते थे। गौड़ भवन कोचर की बहुविध राजनीतिक-सामाजिक गतिविधियों का संचालन केन्द्र रहा और वहीं से जनता, संगठन और सत्ता के मध्य प्रभावी भूमिका का निर्वहन किया | इसी भवन में दलित वर्ग संघ, ''गणराज्य'' और 'वल्लभ सन्देश' पत्रों तथा अनेकानेक संस्थाओं के कार्यालय रहे। 'जीओ और जीने दो', 'सबकी सेवा सबको प्यार' के ध्येय से प्रेरित सन् 1975 में महावीर इण्टरनेशनल सेवा संस्था के संस्थापकों में रामरतन कोचर एक महत्वपूर्ण स्तम्भ थे। भाईजी की जयपुर में गिरफ्तारी हुई। उन्हें संगीन अपराधी की तरह सड़कों पर घुमाया गया। जिस जयपुर - बीकानेर पर उनका लम्बे अर्से तक शासन रहा, वहाँ उन्हें अपमान सहना पड़ा। उसके बाद वे राजनीति से विरक्त हो गए और अध्यात्म की दुनिया में चले गए।सम्पादन एवं पत्रकारिता का भी कोचर को अच्छा अनुभव था। आचार्यश्री विजयवल्लभ सूरीश्वरजी महाराज की उदार एवं समन्वयवादी विचारधारा से प्रभावित होकर उन्होंने 'वल्लभ-संदेश' नामक मासिक पत्र निकाला, जिसके माध्यम से उन्होंने वल्लभ गुरु के समन्वययुक्त उदार विचारों का जन-जन तक प्रसार एवं प्रचार किया।वे पहले शहीद थे स्वाधीन राजस्थान में अपनी किस्म की नायाब मिसाल, जिन्होंने अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए कारावास भोगा। सत्य बोलने की नहीं, लिखने की कीमत चुकायी। आज तो आदमी की रामरतन कोचर जैसी नस्ल जैसे दुर्लभ हो कर रह गयी है। अब वैसे कद के लोग पैदा ही नहीं होते।

जनता का यह प्रिय नेता बीकानेर वासियों की स्मृति में सदैव छाया था, उसी स्मृति को चिरस्थायी बनाने की दृष्टि से बीकानेर के नागरिकों ने श्री रामरतन कोचर स्मारक समिति का गठन किया। इस समिति ने बीकानेर-जोधपुर मार्ग पर स्थित गंगाशहर के एक तिराहे पर रामरतन कोचर की मूर्ति लगाने का निर्णय लिया। कोचर के बीकानेर समाज को दिये अवदान को ध्यान में रखते हुए नगर विकास न्यास ने स्मारक समिति द्वारा चाही गयी जगह को आवंटित कर दिया। पंचधातु से निर्मित इस मूर्ति का अनावरण 24 फरवरी, 1986 को विश्वधर्म के प्रेरक आचार्यश्री सुशील मुनिजी के सान्निध्य में दामोदर आचार्य तत्कालीन राज्यमंत्री ऊर्जा, सिंचाई एवं अकाल सहायता के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ।प्रतिदिन प्रभु दर्शन और प्रतिमाह संक्रांति पर अपने धर्मगुरु के दर्शन और मंगलपाठ श्रवण उनके जीवन-व्रत थे। महाप्रयाण का समय निकट आने का मानो उन्हें पूर्वाभास हो गया था। 14 मार्च, 1982 को संक्रांति पर गुरु दर्शन कर जयपुर में कर्म-पूजा के मन्दिर गौड़ भवन में अन्तिम विश्राम हेतु पहुँचे। 15 मार्च, 1982 को अनन्त की यात्रा की ओर प्रयाण कर दिया। यद्यपि भौतिक देह से वे हमारे मध्य नहीं हैं, किन्तु आज भी वे अपने दृढ़-संकल्पों के साथ यशस्वी देह के रूप में विद्यमान है।